तहख़ाना और फाँसीघर (1569–1658 ई०)

शाही महलों के नीचे नदी की तरफ दो मंजिलों पर तहखाने बने हुए थे, जिनमें सीढ़ियाँ, गलियारे, सुरंगें और कमरे हैं। ये तहखाने मूल रूप से बंगाली बुर्ज के पास स्थित बावड़ी से मच्छी भवन तक बने हुए थे। इनमें जाने के रास्ते उस बावड़ी से, जहाँगीरी महल के पूर्वी आँगन से, अंगूरी बाग से और मुसम्मन बुर्ज से दिये गये थे। वास्तव में मुगल बादशाह अकबर ने अपने महल इस पूरे क्षेत्र में पूर्ववर्ती इमारतों के ऊपर इस प्रकार बनवाये कि उनका तहखाना की तरह उपयोग किया जा सके। महल के प्रत्येक भाग को गुप्त रूप से इन तहखानों से सम्बद्ध कर दिया गया। इसे रचनाविधि से बनाने के कारण अकबर के महल को नदी की ओर अत्यन्त भव्य ऊँचाई भी मिल गयी। इस महल में अकबर का हरम (रनिवास) था जिसमें इतिहासकार अबुल फज़ल के अनुसार 5000 स्त्रियाँ थीं। स्पष्ट हो, इनमें दासियाँ अधिक थीं, अबुल फ़ज़ल ने लिखा है कि—बड़ी संख्या में रक्षकों के होते हुए भी अकबर स्वयं गुप्त रूप से निरीक्षण करता था जो इन तहखानों के माध्यम से ही सम्भव था। ये सभी प्रवेश-द्वार, सीढियाँ, सुरंगें और गलियारे समय-समय पर सुरक्षा कारणों से बन्द कर दिये गये और अब इन तहखानों में केवल एक खिड़की द्वारा ही जाया जा सकता है।

इसके प्रथम तल पर एक अष्ट्राश्र कमरा है जिसमें फाँसीघर बना हुआ था। इसमें 18.5 फीट लम्बा लकड़ी का शहतीर अभी भी लगा है। यहाँ हरम की मर्यादा का उल्लंघन करने वाले अपराधियों को गुपचुप रूप से फाँसी दे दी जाती थी। बाबर की बावड़ी और कुँआ, झरने सहित एक तालाब और कमरों की श्रृंखला भी यहाँ है। गलियारे में प्रकाश और हवा के लिए झिरियाँ बनी हैं। यह गलियारा किले की दीवार के साथ-साथ बना हुआ है। यहाँ एक झरोखा भी है। इसके बीच स्थित दूसरा तल कहीं अधिक विस्तीर्ण है और उसमें बड़े-बड़े सभागार कक्ष और कोष्ठ हैं जो गलियारों से सम्बद्ध हैं। आगरे के किले में मुगल साम्राज्य का सबसे बड़ा खज़ाना रखा जाता था और सम्भवतः यहीं सोने-चाँदी, सिक्के और जेवरात के रूप में सुरक्षित रहता था। ये तहखाने सुरक्षा कारणों से बन्द कर दिये गये हैं। ये आज भी उतने ही रहस्यमय हैं, जितने वे मुगलकाल में थे।

●

SUBTERRANEAN APARTMENTS & PHANSIGHAR (1569-1658 A.D.)

An underground complex of stairways, corridors, tunnels and rooms in two storeys, exists beneath the palaces, all along the river side originally, it extended from the *Baoli* (step-well) near *Bengali-Burj* to the *Machchhi-Bhawan* and had entrances from the *Baoli*, eastern court of *Jehangiri-Mahal*, *Anguri-Bagh* and *Muthamman-Burj*. In fact Akbar built his palace, which originally covered this area, on the existing structures which were converted and used to serve as its foundational basement with which every quarter of his palace was secretly connected. This is also how it assumed such a gigantic height from the river it housed his *Harem* (seraglio) which had 5000 women including maids. As Historian Abul Fazal recorded, and: notwithstanding the great number of faithful guards but his own vigilance, through this complex. All entrances as also the original stairways, tunnels and corridor have been closed up from time-to-time, and it can now be accessible on by this window.

An octagonal room in its first floor had a *Phansighar* (Execution-Chamber) with 18.5 feet long wooden beam across it for private execution of offenders of the Harem chastity Babur's *Baoli* and well, a tank with cascade and series of rooms are also there. Slits for ventilation are given in the corridor which runs all along the Fort wall. There is also a *Jharokha*. The second floor below it is more spacious and has larger apartments and a more complex network of halls, rooms and corridors. Agra Fort contained the largest treasury of the Mughal Empire and this floor was probably reserved for storing treasures in gold, silver coins and jewellery. These underground apartments have now been closed for security reasons. They remain as great amystery today as they were during the Mughal times.